

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव बारत नैनी से महाकाल सेवा दृस्ट द्वारा निकाली गई शिवबारात

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

प्रयागराज, नैनी। शुक्रवार 8 मार्च 2024 महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिव बारत नैनी से महाकाल सेवा दृस्ट द्वारा निकाली गई जो कि पूरे शहर मोहन्य गलियों में धूमाई गई जिसमें बड़ी मात्रा में भक्तजनों के साथ पुलिस प्रशासन अपने पुलिस बल के साथ यातायात की व्यवस्था को निपटते रखते हैं लौगी रही जिसमें जिला अपराध निरोधक समिति से यमुनानगर यूथ टीम प्रभारी मनीष विश्वकर्मा अपनी टीम के साथ सेवा में लगे रहे हैं तामाम समर्जनसेवी लोग व्यापार मंडल के साथ रामजी केसराजी विरुद्ध प्रवक्ता, नागरिक सुरक्षा, एसपीआई टीम के साथ उपस्थित रहे और पूरा आयोजन शानिपूर्ण सफलता करता है। आगामी पर्व होली में भी जिला अपराध निरोधक समिति के

यमुनानगर यूथ प्रभारी मनीष विश्वकर्मा के अनुसार वह अपनी टीम के साथ नियंत्रण एवं शान्ति सुरक्षा में अपना योगदान देंगे।



रेलवे क्रासिंग के पास मिला युवती का शव, कट गए थे दोनों पैर, दुष्कर्म के बाद हत्या की आशंका

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

प्रयागराज। शुक्रवार को राहत 12 बजे साड़ीकूल से बाजार के लिए निकली युवती रेत रात तक बापस नहीं आई। शनिवार को उसका शव रेलवे क्रासिंग के पास मिला। परिजनों ने अपहरण के बाद सम्मिक्त दुष्कर्म कर हत्या की आशंका जतावे हैं। अजात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया। शब्द थाना थोक के कन्हैया के रेलवे क्रासिंग के पास शनिवार को एक युवती का शव मिला। उसके दोनों पैर कट गए थे। पुलिस से सूचना मिलने के बाद रेते बिलखते परिजन मौके पर पहुंच गए। रेत वालों ने अपहरण और सम्मिक्त दुष्कर्म के बाद युवती की हत्या की आशंका जारी की है। पुलिस ने शव को गोस्टमार्ट के लिए भेज दिया है। उसके बाद एक 22 वर्षीय गर्ब की युवती शुक्रवार को दोपहर 12 बजे साड़ीकूल से बाजार के लिए निकली थी, लेकिन काफी देर हो जाने के बाद रेत नहीं लौटी। इससे परेशन होकर परिजनों ने उसकी खोजना शुरू कर दी। देर रात तक उसका कुछ पता नहीं चला। शनिवार की सुबह कहाँहो रेते

करने के आरोप लगाते हुए अजात लौगी पुलिस। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव की शिनाख का परिजनों को जानकारी दी। युवती के दोनों पैर कट हुए थे और पहुंची हैं। मात्र कंसे हुई यह पहुंचने के बाद रेते बिलखते परिजनों ने अपहरण के बाद सम्मिक्त दुष्कर्म कर दिया।



पहाड़पुर में बह रही है भागवत कथा की अमृतपर धारा

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)
प्रतापगढ़ विकास खण्ड लालगंज के पहाड़पुर ग्राम में कथावाचक

किया। इस भागवत कथा में भारी संख्या में लोग मौजूद होकर भगवान् श्रीकृष्ण की लौलाओं का



रामानुजाचार्य देवरहर प्रपनन्नचार्य के मुख्यार्थिव द्वारा विभावत कथा का अवरोक्त कर आनंदित हो रहे हैं। यजमान समूह से अधोक कुमार दुबे ने बताया कि साथ विवरीय इस कथा को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, प्रमोद कुमार दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

श्री लक्ष्मी पब्लिक स्कूल का द्वितीय वार्षिकोत्सव हुआ संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)
उदाहरण प्रस्तुत किया। छात्र छात्राओं के साथ अभिभावकजनों को प्रस्तुत करके संस्कृत एवं श्रीकान्त शांख उपस्थिति रखे। हैलो जॉब एवं श्रीकृष्णाल कीर्तिग के संस्कृत विभाविताय लक्ष्मण के एप्पे फाइनल के छात्र अधिकारी चौबे सम्मानित हुए हैं। मूलतः से सोनभद्र लिले के रोडरसेन्ट तहसील क्षेत्र

के लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। यजमान समूह से अधोक कुमार दुबे ने बताया कि साथ विवरीय इस कथा को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, प्रमोद कुमार दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

के साथ अभिभावकजनों को अंतिम विद्युत 13 मार्च को होगा। यजमान में सुन्दर मोहन दुबे, विनोद लक्ष्मी आदि कथा का व्रतकरण के बाद मात्र दो लोगों द्वारा विभावत की आशाएं घुस्ती हो रही हैं। साथ ही श्रीकृष्ण की लौला का बड़ा आमिक चित्रण

सम्पादकीय

राजनीतिक सरगर्मियों और
आम बजट की चर्चा के बीच
लॉयड जॉर्ज और चर्चिल की बात
अप्रृत तत्व अपां बन्दर वें वर्ष में है यारी यारी 1900 में तभी

आज जब आम बजट के अंतरिम संस्करण की तैयारियां चल रही हैं, तब टाइम मर्शीन के भीतर जाकर यह देखना दिलचस्प होगा कि बजटों को जनो-मुख बनाने के लिए कैसे-कैसे आदोलन हुए और ब्रिटेन में लॉयड जॉर्ज के वित्तमंत्री बनते ही वहां किस तरह वित्तीय इतिहास का सबसे रोमांचक दौर शुरू हुआ, जिसने पूरी दुनिया के बजटों को नई राह दिखाई। इस साल बजट नहीं आएगा। मगर सरकार का हिसाब-किताब तो संसद में पेश होगा ही। लोकतंत्र में बजट सरकार का सबसे कीमती दस्तावेज तो होता है, लेकिन वर्ष में है यानी साल 1900 में। जरा गौर से देखिए, ब्रिटेन की सियासत में कंजर्वेटिव और लिबरल पार्टी के बीच आपको एक नए दल की आहट सुनाई देगी। ट्रैड यूनियन और समाजवादी आदोलनों की पृष्ठभूमि से ब्रिटेन में लेबर पार्टी का उदय होने लगा। इसी दौर में आपको ब्रिटेन की महिला अधिकारों की आवाज़ सुनाई देगी। यह 1901 का साथ है, जब रानी विक्टोरिया परलोक सिधार गई है। किंग एडवर्ड संपत्ति तथ्कनशी है। इसी दौरान ब्रिटेन नी प्रधानमंत्री बने हरबर्ट हेनरी एक्विच यानी एच एच एक्विच। ब्रिटेन के लोग उन्हें प्यार से 'एच एच' या



पश्चिम की दुनिया की इसकी सार्वजनिक छवि जरा ऐसी-ऐसी ही है। बजटों को लेकर इतनी हिकारत इसिलए है कि इसके जरिये सरकारें घर-अधर चराचर अखिल विश्व में जो जहां है, उस पर टैक्स लगाती है और टैक्सों को भला कौन पसंद करेगा? बजट की प्रक्रिया इस बहस को साथ लेकर जन्मी थी कि आम बजट आम लोगों के लिए क्या ही होता है, बजट और इसके एलान तो खास लोगों के लिए होते हैं, तभी तो बजट याद नहीं रखे जाते थे। मगर आइए, उड़ान भरिए टाइम मशीन में हम आपको मिलवाएं एक ऐसे बजट से, जिसने बजटों की रवायत ही बदल दी। इसके बाद ही बजटों को कसौटी मिली, जिसकी रोशनी में इनके आम बजट होने की पैमाइश की जा सकती है। इस बार टाइम मशीन आपको ठुकान के बीच ले जाएगी। ठहरिए, यह मौसीम टूफान नहीं है। यह ब्रिटेन की राजनीति का टूफान है, जो एक बजट से पैदा हुआ था। इसके बाद तो बतानवी संसद का काम करने का तरीका ही बदल गया। यात्रीगण कृपया ध्यान दें, आप टाइम मशीन में हैं और वक्त हैं बीसवीं सदी की शुरुआत का। आप दुनिया का डॉतोहास बदलने वाली सदी के पहले 'बड़ब एच' कहते थे। एकवर्थ लिबरल पार्टी के नेता थे। एच एच के पिता याकूश्यायर में कपड़े का कारखाना चलाते थे। वाकपटु और बौद्धिक क्षमता से सपन्न एकिथ तेजी से राजनीति की सीढ़ियां चढ़े। ब्रिटेन के गृह मंत्री रहे और जिस बक आप ब्रिटेन में है यानी 1905 में तब एकवर्थ देश के वित्त मंत्री थे। एकिथ एक नए तरह की बजट परिणामी लेकर आए। उन्होंने ब्रिटेन के ताकतवर अमीरों पर नया टैक्स लगा दिया हाउर्झ ऑक्सफ़र्ड चुक्कीचुक्की किए जा कर्कषण ब्रॉडवे पर्सनल लाईड जॉर्ज उनके वजीरे खजाना यानी वित्त मंत्री बने। लॉयड जॉर्ज को उनके चाचा ने पाला था, जो जूते सिलने का काम करते थे। वाकपटुता और बहस के लिए विख्यात जॉर्ज जब संसद में बोलते थे, तो उनके सामने कोई इक्तिता नहीं था। जॉर्ज बड़े दबंग थे और प्रधानमंत्री एकिथ के लिए चुनौती भी। प्रधानमंत्री एच एच ने उनकी लोकप्रियता और क्षमताएं देखते हुए उन्हें वित्त मंत्री बनाया था। लॉयड जॉर्ज के वित्त मंत्री बनते ही ब्रिटेन के वित्तीय इतिहास का सबसे रोमांचक दौर शुरू होता है, जिसने पूरी दुनिया के बजटों को नई राह दिखा दी।

महिलाएं देश बनाती हैं, इसलिए जरूरी है आधी आबादी का आर्थिक सशक्तीकरण

दरा को जावा जावाद पाना नहीं जाए को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने से न सिर्फ आर्थिक विकास, बल्कि सामाजिक बदलाव की भी जमीन है।

उनका समयन करने से उसका रातारा कई गुना बढ़ सकती है। इसे हासिल करने के लिए संगठनों को श्रमबल में विविधता लाने के महत्व और उपरोक्त पाय-व्यवस्था प्रदान करने, प्रगतिशील अवकाश नीति अपनाने, बाल-देखभाल सह्यता सुनिश्चित करने एवं उन्हें अन्य सुविधाएं देने से जटानाक पाता के साथ जड़ाना न समस्या हो सकती है और बहेतर समस्या समाधान, तेजी से निर्णय लेने और विकास एवं सफलता के लिए समग्र सुधार में संगठनों का समर्थन कर सकती हैं इस समय देखा के आर्थिक अपने परिवार का सहयोग करने में भी सक्षम होती हैं। वित्तीय योग्यता भी सशक्तीकरण से उके जीवन की गुणवत्ता में भी सुधार होता है। यह उन्हें अपने बच्चों की स्वास्थ्य देखभाल

ज्योति जाय-ज्यवस्था प्रदान करने,
प्रगतिशील अवकाश नीति अपनाने,
बाल-देखभाल सहायता सुनिश्चित
करने एवं उन्हें अन्य सुविधाएं देने से



उनकी पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए उनका वित्तीय सशक्तीकरण आवश्यक है, ताकि वे देश के विकास को प्रगतिशील और समावेशी बनाने में बदलाव की वाहक बन सकें। आज हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि महिला सशक्तीकरण महज एक नारा नहीं है, बल्कि इसे हासिल करने से विभिन्न आर्थिक-सामाजिक पहुँचों पर ठोस परिणाम सामने आते हैं। उदाहरण के लिए, श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाकर उन्हें सशक्त बनाने से न केवल जीडीपी में उल्लेखनीय वृद्धि होती है, बल्कि में लैंगिक रूप से असमान अर्थव्यवस्था वाले देशों की तुलना में औसत वार्षिक जीडीपी वृद्धि दर 0.8 प्रतिशत अधिक है। विकास दर में यह 3 अंतर 15 सालों की अवधि में जीडीपी के अतिरिक्त 20 फीसदी के बराबर है। यहां तक कि मैंकिंजे की एक रिपोर्ट भी इसका बात पर प्रकाश डालती है कि महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने से 2025 तक भारत की जीडीपी 770 अरब अमेरिकी डॉलर तक बढ़ सकती है। इसलिए मजबूत आर्थिक विकास करने वाले भारत द्वारा श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने और स

आतश्यकता को महसूस करने की जरूरत है। इसे सुनिश्चित करने से अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बढ़ सकती है और विविध विचारों और दृष्टिकोण वाली कपनियों को लाभ भी हो सकता है। चूंकि महिलाएं कई भूमिकाएं निभाती हैं और व्यक्तिगत एवं पेशेवर स्तर पर विभिन्न तरह की जिम्मेदारियां संभलती हैं, इसलिए संगठनों को उन्हें काम एवं जीवन में बेहतर संतुलन बनाने में मदद करने के लिए आगे आना चाहिए, ताकि विरीय विकास के लिए उन्हें अपने निजी जीवन का त्याग न करना पड़े। इसे आसानी से हासिल किया जा सकता है। ये प्रयास महिलाओं की भलाई और उन्हें बैहतर रोजगार सुरुटि प्रदान कर कार्य में सार्थक योगदान देन में सक्षम बना सकते हैं। नेतृत्व में विविधता लाने के लिए संगठन के भीतर वरिष्ठ भूमिकाओं में महिलाओं को बढ़ावा देने के लिए अवसर भी पैदा करने होंगे सीखने की पहल, कोचिंग एवं सलाह के माध्यम से महिला प्रतिभाओं की पहचान करने औरउन्हें नेतृत्वकारी भूमिका की खातिर तैयार करने से वे अपने कैरिएर को कुशलता एवं कौशल का समर्थन करना और डिजिटल संसाधनों तक पहुंच में सुधार करना जरूरी है, जो बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था में उनकी भागीदारी बढ़ा सकता है और उन्हें सफलतापूर्वक आगे बढ़ने में मदद कर सकता है। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने से सिर्फ आर्थिक विकास ही हासिल नहीं होता, बल्कि यह सामाजिक बदलाव लाने के लिए एक सशक्त साधन के रूप में भी काम करता है। उनके लिए विरीय अवसर पैदा करने और उन्हें आय के नियमित स्रोत से जोड़ने से न केवल उनकी महिलाओं वर्ग स्वतंत्र त्रौपीर आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें सशक्त बनाना जरूरी है, ताकि वे भारत को पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने में अग्रणी ताकत के रूप में उभर सकें। भारतीय अर्थव्यवस्था में उनके महत्वपूर्ण योगदान को देखते हुए महिला सशक्तीकरण की चर्चा करना न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि जरूरी भी है। उन्हें जरूरी समर्थन, प्रोत्साहन और मान्यता देने से यह सुनिश्चित करना संभव होगा कि वे आगे बढ़ें 30+ समाज पर सकारात्मक प्रभाव डालती रहें।

चीन की दोहरी मुश्किलों का क्या भारत उठा सकता है कोई लाभ, पर कठिन है राह

भूकम्प के खतरे के साए में हिमालयी लोग

भूकम्प के खतरे के साए में हिमालयी लोग

जापान के लोग भूकम्प जैसी प्रकृतिक अपदार्थों के साथ जीना सीख चुके हैं, इसलिए वहाँ बड़े भूकम्प में भी जन और धन की बहुत कम हानि होती है। जबकि भारत में मध्यम परिमाण का भूकम्प भी भारी तबाही मचा देता है। हाल ही में जापान में आए विनाशकारी भूकम्प ने भारतीय हिमालय में बसे लोगों को भी डरा दिया है डरना भी स्वाभाविक ही है, क्योंकि शिव की सबसे युवा परत श्रृंखला हिमालय भी भूगर्भीय हलचलों के कारण भूकम्प की दृष्टि से कोई कम संवेदनशील नहीं है। भौज्ञानिकों का यहाँ तक मानना है कि हिमालय के गर्भ में इतनी भूगर्भीय ऊर्जा जमा है कि अगर वह अचानक एक साथ बाहर निकल गई तो उसका विनाशकारी प्रभाव कई परमाणु बमों के विस्फोटों से भी अधिक हो सकता है। इराने वाली बात तो यह है कि राज्यों से जुड़ा है और इसकी साइस्मिक स्थिति इहीं राज्यों के समान है, इसलिए हम नेपाल की गिनती हिमालयी राज्यों से कर रहे हैं। हिमालयी राज्यों में भी सर्वाधिक 24 भूकम्प जम्प-क्षमीर और लेह लद्वाख में दर्ज हुए हैं। इनमें भी सर्वाधिक 11 भूकम्पों का केन्द्र किस्तवाड़ रहा है। इनके अलावा उत्तराखण्ड में 6 और हिमालय में 5 भूकम्प दर्ज हुए हैं। इसी तरह पूर्वितर में ईस्ट और वेस्ट गारोहिल्स, मणिगंग, अरुणाचल, मीजोरम और नागालैंड में भूकम्पों की आवृत्ति दर्ज हुई है। नेपाल में 4 नवम्बर दर्ज लेकर 8 नवम्बर 2023 तक 2.8 से लेकर 5.6 परिमाण के 17 भूकम्प दर्ज किए गए। वहाँ एक ही दिन 4 नवम्बर को 2.8 से लेकर 3.7 परिमाण के 8 भूकम्प दर्ज किए गए। भारत की संपर्ण अब तक का सबसे भयंकर भूकम्प था जिसके कारण 8,649 लोग मारे गए थे और 2,952 घायल हुए थे। भूकंप में निकलने वाली ऊर्जा मुख्य रूप से पृथकी की सतह के नीचे टेक्टोनिक मुंहों की गति या हलचल से उत्पन्न होती है। यह गतिविधि भारी मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न करती है। तुलना के लिए, परमाणु विस्फोट से निकलने वाली ऊर्जा, जैसे कि परमाणु बम विंचंडन या संलयन प्रतिक्रियाओं के माध्यम से परमाणु ऊर्जा की त्रीवि रिहाई से प्राप्त होती है। परमाणु विस्फोट भी शक्तिशाली होते हैं, लेकिन उनका ऊर्जा उत्पादन अमतीर तर पर किसी बड़े भूकंप की तुलना में बहुत कम होता है। अब ताव सबसे शक्तिशाली परमाणु बम विस्फोट जार बॉम्बा का था जैससे उत्पन्न बहरहाल भारतीय हिमालय क्षेत्र में आशंका जताई जा रही है उसकी शक्ति कई परमाणु बमों से अधिक हाने का आशंका जासकता मार प्रकृति के साथ रहनाओं का बाहरी मात्रा में ऊर्जा सीख कर बचाव अवश्य किया जाना सकता है। दरअसल आदमी को भूकम्प नहीं बिक उसी के द्वारा अपनी सुरक्षा और आश्रय के लिए बनायाए गया मकान मारता है। 1930 के उत्तराखण्ड के लातूर क्षेत्र में 6.2 परिमाण का भूकंप आता होता है। उसमें लगभग 10 हजार लोग मारे जाते हैं और 30 हजार से अधिक लोगों के घायल होने के साथ ही 1.4 लाख लोग बेघर हो जाते हैं। जबकि 28 मार्च 1999 को चमोली में लालूपुरा से भी बड़ा 6.8 मैग्निट्यूड का भूकंप आता है तो उसमें केवल 103 लोगोंने

कुछ लोग खुश हैं, लेकिन अब भी आर्थिक वृद्धि के लाभ से बंचित हैं बड़ी आबादी

पिछले दिनों मैंने कई लेख पढ़े कि राह आदमी खुश है, क्योंकि देश में अभूतपूर्व आर्थिक विकास हुआ है। मैं नहीं कहता कि आर्थिक वृद्धि नहीं हुई है, पर यह वृद्धि अभूतपूर्व नहीं है और इसका लाभ भी बड़ी आवादी को नहीं मिल पाया है। वर्ष 2024 का पहला कॉलम होने के कारण सबसे पहले मैं नए साल की शुभकामनाएं व्यक्त करता हूँ। खुशी दरअसल विभिन्न चीजों का मिश्रण है। इस देश के अलग-अलग हिस्सों को मिलाकर लगभग 142 करोड़ लोग रहते हैं और मेरी चिंता यह है कि इनमें से कितने लोग सुखी हैं और कितने लोग सुखी नहीं हैं। पिछले दिनों मैंने कई लेख पढ़े, जो सरकार के इस दावे को मजबूती प्रदान करती थी कि हर आदमी खुश है। उन लेखों का दावा है कि लोग खुश इसलिए हैं, क्योंकि देश में अभूतपूर्व आर्थिक विकास हुआ है, जिसका लाभ हर क्षेत्र के लोगों को मिल रहा है। मैं यह नहीं हुई है, लेकिन मैंनिश्चित तौर पर यह वृद्धि अभूतपूर्व नहीं है। आर्थिक वृद्धि का सुनहरा दौर तो पूर्ववर्ती यूपीएस सरकार में 2005 से 2008 की तीन वर्षों की वह अवधि में था, जब अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर क्रमशः 9.5, 9.6 और 9.3 फीसदी सालाना थी। जबकि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री काल के पिछले नौ वर्षों में औसत वृद्धि दर 5.7 प्रतिशत रही है। अगर मौजदा वित्त वर्ष में 6.5 फीसदी की अनुमानित वृद्धि दर को भी इसमें जोड़ लें, तो औसत वृद्धि दर 5.8 प्रतिशत होगी। यह वृद्धि दर न तो अभूतपूर्व है और न ही शानदार। यह संतोषजनक वृद्धि दर है, लेकिन न तो सुदूरप्राचीनी है और न ही पर्याप्त। सरकार की आर्थिक नीति प्रत्यक्ष करने को कम रखने, अप्रत्यक्ष करने को ज्यादा व दबाव भरा बनाए रखने तथा वर्चस्वादी उपायों का मिला-जुला स्वरूप है। सड़क, रेलवे, बंदरगाह और हवाई अड्डे जैसे ढांचागत क्षेत्रों में पूँजी निवेश ज्यादा है, जबकि शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा में आवंठन कम है, और महिला विकास जैसे कुछ क्षेत्रों में सब्सिडी की सुविधा है। ऐसे में, संतोषजनक वृद्धि दर ने समाज के कुछ क्षेत्रों को खुश किया है। मैं इन संतुष्ट क्षेत्रों के बारे में बता सकता हूँ। ये हैं : बड़े और मध्यम आकार के कॉर्पोरेट्स, मोटी आय वाले लोग, बैंकर्स, शेयर बाजार के निवेशक, व्यापारी और दलाल, नीलामी की वस्तुओं खरीदने वाले, सॉफ्टवेयर प्रोफेशनल्स, बड़े व्यापारी और जज, चार्टर्ड अकाउटेंट, डॉक्टर तथा वकील, कॉलेज और विश्वविद्यालयों के शिक्षक, सरकारी कर्मचारी, दैनिक किसान और साहबकार। इस तर्जीर का स्थान पक्ष यह है कि इसमें कई क्षेत्रों के लोग पीछे छूट गए हैं-कुछ क्षेत्रों के लोग तो गिनती में ही नहीं हैं-और ऐसे तमाम क्षेत्रों को मिला दिया जाए, तो यह बहत बड़ी आवादी

है। इनमें वे 82 करोड़ भारतीय हैं, जिन्हें हर महीने प्रति व्यक्ति पांच किलोग्राम मुफ्त राशन मिलता है। मुफ्त राशन योजना कोई गर्भ की चीज़ नहीं है, जिससे देश की आर्थिक उननति या समृद्धि मापी जा सके। मुफ्त राशन योजना दरअसल दूर-दर तक व्याप्त कृपेषण और कृषि से भी एक तिहाई (यानी 8.9 करोड़) और कुल सक्रिय कामगारों का आधार हिस्सा (यानी 1.8 करोड़) आधार के लिए भुगतान व्यवस्था लागू होने के कारण मनरेखा के तहत काम करने में असमर्थ है। मनरेखा की मदद छिपा जाने से इतने सारे परिवर्गों के इतने लोग किस तरह अपना गजर-सप्तर

जगहों पर जनता में व्याप्त भूख के कर रहे हैं? इन लोगों के लिए जीवन बारे में ही बताती है। देश के आधे परिवार चावल या गेहूं खरीद सकने में समर्थ क्यों नहीं है? इसका जवाब है कम आय या बेरोजगारी। सरकार के पास इन दो जवलंत मुद्दों का हल निकालने की कोई नीति नहीं है। परिवारों की कम आय का हल निकालने के लिए मनरेगा जैसी एक योजना है। लेकिन इस योजना के प्रति इस सरकार की उपेक्षा बिल्कुल शुरुआत से ही स्पष्ट है। अप्रैल, 2022 से सरकार ने मनरेगा में पंजीकृत कामगारों की सूची से 7.6 करोड़ नाम हटा दिए हैं। मानो यही काफी न हो, पंजीकृत कामगारों में यापन बेहद कठिन है, लिहाजा खुशहाल तो ये कर्तव्य नहीं है। देश में एक और बड़ी आवादी खुश नहीं है। ये वे लोग हैं, जिनके पास कोई रोजगार नहीं है। सरकार अब रोजगार जैसी बात नहीं करती। उसका मानना है कि स्व रोजगार भी हो रही वृद्धि की बात कहकर वह लोगों को भुलावा दे सकती है। जिस देश में बच्चे सितारे से आठ साल तक स्कूलों में, और वह भी बांग्रे किसी कौशल प्रशिक्षण के बुगराते हैं, उस देश में स्वरोजगार का एक अर्थ बेरोजगारी भी है। जो स्त्री-पुरुष स्वरोजगार में हैं।



अनियंत्रित क्षतिग्रस्त कार गाड़ी ने बाजार में मचाया कोहराम, बाल बाल बचे लोग

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

दाला सोनभद्र। शुक्रवार दाला चौके क्षेत्र में आज शुक्रवार शाम को शक्तिग्रस्त वाराणसी मुख्यमार्ग की ओर से आ रही क्षतिग्रस्त इनोवा कार ने जाकर दाला बाजार में उत्पात मचाया। प्रातः जनकारी के अनुसार भारत सकार लिखा हुआ इनोवा कार लड़ाजूर्ज 8229 गुप्तुरा की ओर से ही क्षतिग्रस्त होकर आ रही थी और बेलागां होकर ही दाला बाजार के सर्विस लेन डिवांडर में धूस गई तथा एक सज्जी का सामने आया उसे तेज टक्कर मारकर रिंग पर ही मौके से फरार हो गई। गालियत वह रही कि शाम के वक्त सज्जी आदि का दुकान



कोलगेट रेणुसागर मे एनसीएल ककरी परियोजना की जमीन पर अवैध कब्जा से लोगों मे भारी रोष

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

अवैध कार्रवाई की एनसीएल करी परियोजना के अन्वयनीय परिसर के चारों तरफ खाली छोड़ी एनसीएल की जमीनों पर अवैध कराया तेजी से हो रहा है जिसके देखे हुए भी एनसीएल करकरी की सुधा विवाह साधी बैठती हुई है। एनसीएल के सुरक्षा विभाग ना तो अनेक जमीनों की रखवाली कर पा रहा है और ना ही इन भू माफियाओं पर कई कार्रवाई कर रहा है जिसके कारण वाराणी के सुरक्षा विभागों के नियन्त्रित क्षेत्रों का द्वारा एनसीएल की कीमती जमीनों पर आलोचन महल तैयार किया जा रहे हैं। एनसीएल में सुरक्षा विभाग की एनसीएल की भूमि व उपकरणों की देखरेख के लिए बाजार भी एनसीएल के सुरक्षा विभागों के नियन्त्रित क्षेत्रों खदान से दीजल कबड़ी कोयले की चोटी हो रही है तो वही एनसीएल की कीमती जमीनों पर



शिव और शत्तियों का यह अद्भुत महामिलन : ब्रह्माकुमारी सुमन

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

सोनभद्र। शुक्रवार को महाशिवरात्रि और अंतर्राष्ट्रीय महाला दिवस का अद्भुत संयोग भारतीय सनातन संस्कृति के अध्युदय के लिए मगलकारी सोनभद्र में जयंती और शत्तियों का यह महामिलन भारत में



आदि सनातन दीवाय संस्कृति की पुनर्जीवन का ध्यानवाहक बनेगा। ब्रह्माकुमारी संस्कृति के नारियों के आध्यात्मिक संशोधित कारण का जीवन दिवस के 140 दिनों में फैले हुए 8500 से भी अधिक सेवाक्रेन्दों के माध्यम से मानवकर्मी की सेवा का संचालन और प्रशासन ब्रह्माकुमारी बहनों के द्वारा ही होता है। उक्त बातें ब्रह्माकुमारी संस्कृति के विकास नगर सेवा केंद्र पर अंतर्राष्ट्रीय महाला दिवस के अवसर पर आयोगित महिला एनसीएल का यह महामिलन सम्मेलन ठारायात्मिक शक्ति द्वारा महिला

परिवारिक और मानवीय मूल्यों की संरक्षिका होती है। भारतीय जनता पाटी महिला मोर्ची के जिलाध्यक्ष डॉ अनुपमा सिंह ने महिला सशक्तिकरण के संबंध में अपने अनुभव को साझा करते हुए तथा किया कि आध्यात्मिक तथा स्वर्यों को और परमात्मा के सत्य स्वरूप की पहचान होने से ही उक्त जीवन का सशक्तिकरण हुआ है। इस अवसर पर रुद्धी प्रसाद अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद, रोडवर्स्टर्स ने कहा कि महिलाओं के द्वारा दिवस के अवसर पर आयोगित महिला एनसीएल का नई दिशा प्रदान की जा सकती है। सनातन परम्परा के अनुसार आयोगित का प्रीतो तिलक, बैच तथा अंगूष्ठात्मक के द्वारा स्पायरिंग किया गया। स्पेशन का प्रारंभ वर्ष 1987 में जयंती और उक्त सोनभद्र के घोपन थाना अंतर्गत प्रामाण

बनाने के लिए प्रोतोहित करते हैं। सुविज्ञात महिला चिकित्सक डॉ अनुपमा सिंह ने महिला सशक्तिकरण के संबंध में अपने अनुभव को साझा करते हुए तथा किया कि आध्यात्मिक तथा स्वर्यों को और परमात्मा के सत्य स्वरूप की पहचान होने से ही उक्त जीवन का सशक्तिकरण हुआ है। इस अवसर पर रुद्धी प्रसाद अध्यक्ष, नगर पालिका परिषद, रोडवर्स्टर्स ने कहा कि महिलाओं के द्वारा दिवस के अवसर पर आयोगित महिला एनसीएल का नई दिशा प्रदान की जा सकती है। सनातन परम्परा के अनुसार आयोगित का प्रीतो तिलक, बैच तथा अंगूष्ठात्मक के द्वारा स्पायरिंग किया गया। स्पेशन का प्रारंभ वर्ष 1987 में जयंती और उक्त सोनभद्र के घोपन थाना अंतर्गत प्रामाण

महिलाओं से ही शिक्षित समाज की होती है उन्नति: प्रियंका

(आधुनिक समाचार नेटर्वर्क)

सोनभद्र। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष में महिला शक्ति सोन

भिक्षिका विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस अधिकारी यशवंत चौके की पतनी प्रियंका महिला शक्ति सोनभद्र

विद्यालय सिंह पुलिस

